**नमो आदिनाथ।**

# जैन धर्म मे अभिषेक और यक्ष- यक्षिणी

By Manjunath Nirantar Jain

## जलाभिषेक श्रेष्ठ

दूध मे गाय के दूध का गंध होता है, इसलिए उसे दुग्धोदक मानना चाहिए, भगवान का गंधोदक नहीं।

ऐसे ही पंचामृत मे पंचामृत का गंध हे, भगवान का नहीं।

जल मे दूसरे द्रव्य के गंध को
ग्रहण करने की शक्ति होती है।
जब जिनेन्द्र बिंब का अभिषेक
जल से होता है, तब जल
भगवान का सुगंध ग्रहण कर के
सुगंधित हो कर भगवान का
गंधोदक बन जाती है।
पर पंचामृत मे कभी भी
पंचामृत के गंध का अभाव नही

होता, बल्कि पंचामृत का गंध भगवान को भी चिपक जाता हैं।

जिस अभिषेक के जल मे केवल और केवल भगवान का ही सुगंध है, वहीं भगवान का गंधोदक हैं।

## यक्ष-यक्षिणी का श्रद्धान करना तत्त्वार्थ श्रद्धान नहीं हैं।

**तत्त्वार्थश्रद्धानम् सम्यग्दर्शनम्।**

**(tattvarth sutra)**

**तत्त्व का अर्थ मोक्ष हैं क्योंकि मोक्ष ही परम तत्त्व हैं।**

**अर्थ का तात्पर्य निमित्त हैं।**

**मोक्ष के निमित्तो का श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन हैं।**

मोक्ष के निमित्त हैं: जिनेन्द्र भगवान (देव), जिनेन्द्र वाणी (शास्त्र), और सच्चे दिगम्बर जैन मुनि (गुरु).

देव, शास्त्र, और गुरु ही तत्त्वार्थ हैं, भूतार्थ हैं।

जिनेन्द्र भगवान (देव), जिनेन्द्र वाणी (शास्त्र), और सच्चे दिगम्बर जैन मुनि (गुरु) की भक्ति (श्रद्धान्) से ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होगी।

जिस जीव मे सम्यग्दर्शन है वो जीव केवल जिनेन्द्र भगवान (देव), जिनेन्द्र

वाणी (शास्त्र), और सच्चे दिगम्बर जैन मुनि (गुरु) की ही भक्ति करेगा।

सम्यग्दृष्टि जीव के सच्चे दिगम्बर जैन मुनि बन कर मोक्ष मार्ग पर चलने को तत्त्वार्थवृत्ति कहते है।

भव, भव के तत्त्वार्थवृत्ति से ही सर्वार्थसिद्धि (अर्थात केवलज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति) होती है।

तत्त्वार्थसूत्र का मंगलाचरण तत्त्वार्थश्रद्धान से ही शुरू होता है।

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म भूभृताम्।

ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्-गुण लब्धये।

अर्थः मेरे जिनेन्द्र आप मोक्षमार्ग के नेता हैं। आपने कर्म रूपी पर्वत को भेद कर जगत के समस्त तत्त्वों को जाना हैं। मैं आप की वन्दना करता हू। अगर आप के गुण मुझमें प्रकट हो जाये तो मैं भी आप के जैसा बन कर मोक्ष पा लूंगा।

तत्त्वार्थश्रद्धान स्व समय है (जिनेन्द्र भगवान (देव), जिनेन्द्र वाणी (शास्त्र), और सच्चे दिगम्बर जैन मुनि (गुरु) की भक्ति स्व समय हैं)।

यक्ष-यक्षिणी का श्रद्धान पर समय हैं।

सम्यग्दृष्टि जीव का सम्मान होता हैं, श्रद्धान नहीं।

सम्मान के नाम पर यक्ष-यक्षिणी का श्रद्धान करना तत्त्वार्थ निंदा ही हैं।

मन्दिर मैं यक्ष-यक्षिणी के मूर्तियों को वैभव के प्रतीक के रूप मैं रखा जाता

**हैं, जैसे छत्र आदि, उनकी पूजा करने केलिए नहीं।**

## Bhaktamar stotra - 11

दृष्ट्वा भवन्त मनिमेष विलोकनीयं

नान्यत्र तोष मुपयाति जनस्य चक्षुः।

पीत्वा पयः शशिकर द्युति दुग्ध सिन्धोः

क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत्?

**मेरे जिनेंद्र भगवान आप ही पूरे विश्व मे बिना पलक झपकाए देखने योग्य है। आपको देखने के बाद किसी और का चहरा भाता ही नहीं है। जिसने क्षीरसागर के पानी पीया हे वो समुद्र की पानी पीने की इच्छा क्यों करेगा।**

*समोशरण मे सभी स्वर्गों का वैभव एक साथ देखने को मिलता है, और वह वैभव, भगवान के सामने समुद्र के पानी की तरह खारा लगता है।*

**ऐसे ही मंदिर मे यक्ष-यक्षिणी की पूजा या सम्मान का भाव नहीं आना चाहिए।**

**चंद्रगुप्त मौर्य का आचार्य श्री भद्रबाहु का शिष्य बनना पर भव के तत्त्वार्थश्रद्धान की ही महिमा है।**

**यक्ष-यक्षिणी का श्रद्धान अभूतार्थ है।**